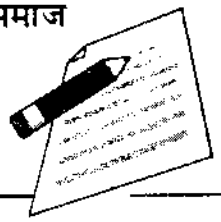

24

एकता और अनेकता

इस पाठ में आप भारतीय समाज के बुनियादी लक्षणों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। पहले आपको कुछ अवधारणाओं को समझना होगा। ये अवधारणाएँ--संस्कृति, राष्ट्रीय एकता, अनेकता, बहुलता और एकीकरण की हैं। भारत एक विशाल देश है। इसका भौगोलिक क्षेत्र 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है एवं जनसंख्या एक अरब से थोड़ी ज्यादा है। यह देश वसुधैव कुटुम्बकम् पर आधारित है इसकी सांस्कृतिक विरासत बहुत विशाल है। इसमें कई समुदाय और जीवन पद्धतियाँ हैं। मनुष्य की बसावट भारत में पाषाण-काल से हुई है। यह भू भाग कई समुदायों की धरोहर है और यहां की सांस्कृतिक परंपरा बड़ी धनाढ्य है। भारत में महान सभ्यता, जिसे सिन्धु घाटी सभ्यता कहते हैं को विकसित किया है। इस सभ्यता में गाँव और शहर की संस्कृतियों का नैरन्तर्य है। इससे आगे इस सभ्यता में ज्ञान का एक बहुत बड़ा सागर है, जिसे हम वेदों, उपनिषदों एवं महाकाव्यों के रूप में देखते हैं। इसने कई धर्मों, विभिन्न भाषाओं एवं विचारों को पैदा करने का वातावरण दिया है। यहाँ पर कई धर्म बाहरी देशों से आए हैं। इन धर्मों के माध्यम से कई धर्मावलम्बी एक दूसरे के साथ अन्त:क्रिया करते हैं और इसके परिणामस्वरूप एक ऐसा सांस्कृतिक ताना-बाना बनता है, जिसके लक्षण अनवार्य रूप से भारतीय हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- भारतीय समाज के लक्षणों का विश्लेषण जान सकेंगे;
- क्षेत्र, भाषा, धर्म, संस्कृति और जातीय विविधता की जानकारी प्राप्त करेंगे; और
- प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक भारत के समाजिक-सांस्कृतिक एकता को समझेंगे।

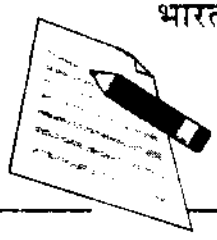

Notes

24.1 भारतीय समाज के लक्षण

हमारे समाज को एक परम्परागत और अध्यात्मिकता पर आधारित समाज के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा भौतिक उन्नति को कम महत्व दिया जाता है। वर्तमान में वस्तुएँ तीव्र गति से बदल रही हैं, आज हम प्रजातान्त्रिक, धर्म निरपेक्ष तथा आधुनिक राष्ट्र के रूप में निरन्तर अग्रसर हो रहे हैं। निर्विवाद रूप से हिन्दू जीवन पद्धति जिसमें सहनशीलता, अहिंसा जैसे विचारों ने राष्ट्र को वर्तमान स्वरूप दिया है। वहीं विभिन्न धर्मों– जैसे इस्लाम, इसाई और पाश्चात्य समाज के प्रभाव के बावजूद भारतीय जीवन पद्धति निरन्तर रूप से चल रही है।

परम्परागत हिन्दू समाज का विश्वास प्रदत्त प्रस्थिति में रहा है। पुरुषार्थ की अवधारणा इस समाज में जीवन को मार्गदर्शन देती रही है।

इस जीवन के पुरुषार्थ से तात्पर्य–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। जीवन के इन चार उद्देश्यों को विचारकों ने चार आश्रमों में बांटा है। ये आश्रम हैं– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।

इन चार आश्रमों के अतिरिक्त ऋण की अवधारणा भी है, यह ऋण ईश्वर को चुकाना होता है। इन ऋणों की पूर्ति अपने कर्त्तव्यों को पूरा करके की जाती है। इसके अतिरिक्त कर्म भी होते हैं, जो मुख्य रूप से पुनर्जन्म से जुड़े होते हैं।

ये सभी ऋण आदर्श रूप में अधिक पाये जाते हैं और व्यवहार में कम। अगर हम आज परम्परा को देखें तो पता लगेगा कि आज भी ये परम्पराएँ देखने को मिलती हैं। इन परम्पराओं को कर्मकाण्ड के रूप में किया जाता है। व्यवहार में इनका स्वरूप लचीला होता है। ये कर्मकाण्ड या संस्कार केवल हिन्दुओं में ही नहीं अपितु अन्य समुदायों में भी देखे जा सकते हैं। धर्म निरपेक्ष सिद्धांत हिन्दुओं के साथ-साथ अन्य सभी समुदायों में भी देखने को मिलते हैं। वर्तमान में होली, दीपावली, दशहरा, ईद, ईदुल जुहा, गुड फ्राइडे, क्रिसमस, गुरु नानक जयन्ती, महावीर जयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा आदि त्यौहार सभी समुदायों द्वारा मनाये जाते हैं। इनकी तुलना स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस से भी की जा सकती है। आधुनिक भारत में ये सब त्यौहार मनोरंजन के लिए ही मनाए जाते हैं।

भारत में सभी नृत्य, संगीत, चलचित्र, खेलकूद, दर्शन, खगोलशास्त्र इत्यादि पाये जाते हैं। भरतनाट्यम, कुचीपुडी, कत्थकली, ओडीसी, मणीपुरी, मोहिनी अट्टम, कत्थक और अनेक लोक-नृत्य जैसे भांगड़ा, गरबा इत्यादि एक वैश्विक घटना के रूप में उभर कर सामने आ रहे हैं।

पश्चिमी देशों में योग और अनुभवातीत चिन्तन की बहुत बड़ी मान्यता है, इसीलिए महर्षि योगी ने न्यूयार्क में पहला वैदिक शहर बनाया है। आयुर्वेद जो जीवन का विज्ञान

है और जो वनस्पतियों के माध्यम से रोग का निदान करता है, उसने दूर-दूर तक विश्व को प्रभावित किया है, इस तरह अपनी भारतीयता को बनाए रखकर हम आधुनिक विश्व में आगे चल रहे हैं। हमारी आधुनिकता केवल पश्चिम की नकल मात्र नहीं है लेकिन स्थानीय परम्परा (जैसे कि संवेगात्मक परिवार के बन्धन, आध्यात्मिकता एवं वैकल्पिक चिकित्सा) और आधुनिकता के रूझान वाले युक्तायुक्त दृष्टिकोण का मेल है। हमारे यहाँ से लगभग 6 भारतीयों ने नोबल पुरस्कार लिया है। नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्वान हैं– रविन्द्रनाथ टैगोर, सर सी. वी. रमन, एस. चन्द्रशेखर, मदर टेरेसा, एच. सी. खुराना एवं अमृत्य सेन आदि। इन कपितय भारतीयों के अतिरिक्त कुछ ने अन्तर्राष्ट्रीय बुकर तथा अन्य पुरस्कार प्राप्त किये हैं।

24.2 प्रकृति तथा अनेकता का विस्तार

भारत में प्रजाती, धर्म, भाषा, जाति और संस्कृति की विविधता है। समाजशास्त्री कहते हैं कि भारत की एकता राजनीतिक-भौगोलिक और सांस्कृतिक है। विविधता बनी हुई है लेकिन साथ ही साथ भारत की सांस्कृतिक मुख्यधारा भी विद्यमान है। अनुमानत: भारत में 4,635 समुदाय हैं। इन समुदायों में 751 अनुसूचित जातियाँ हैं और 461 अनुसूचित जनजातियाँ हैं। बहुत बड़ी संख्या में अनुसूचित जातियाँ उत्तर प्रदेश में हैं। ये अनुसूचित जातियाँ नागालैण्ड, अरुणाचल, मेघालय, मिजोरम और अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूहों में नहीं पायी जाती। अनुसूचित जनजातियाँ दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, गोवा, पाण्डीचेरी में नहीं मिलती। भारत के सभी राज्यों में बहुत बड़ी सीमा तक विविधता मिलती है।

जैसा कि आप जानते हैं कि सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की जानी-पहचानी सभ्यता है। इस सभ्यता का एक भाग पाकिस्तान में भी है। सिन्धु घाटी में जहाँ बहुत बड़ी भौतिक संस्कृति है, वहाँ कई प्रकार की कलाएँ एवं कारीगरी है। इस सभ्यता में योजनाबद्ध बसे हुए शहर थे और पानी निकासी की व्यवस्था थी। बन्दरगाह से जुड़े हुए शहर कृषि और धार्मिक संगठन की व्यवस्था भी थी। इस सभ्यता की लिपी भी है, जिसको समझना संभव नही हुआ है।

पाठगत प्रश्न 24.1

निम्न में से गलत व सही छांटिए:

(1) सिन्धु घाटी सभ्यता आंशिक रूप से बांग्लादेश में पायी जाती है। ( )

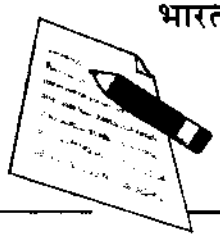

Notes

(2) अनुसूचित जाति के अधिकांश लोग उत्तर प्रदेश में पाये जाते हैं। ( )

(3) भारत में लगभग 600 अनुसूचित जातियाँ पायी जाती हैं। ( )

(4) सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपी पढ़ी जा चुकी है। ( )

24.2.1 धर्म

भारत में धार्मिक विविधता भी है, यहाँ आठ बहुत बड़े धार्मिक समुदाय हैं। जनसंख्या की दृष्टि से हिन्दू बहुसंख्यक हैं यानी 83 प्रतिशत हैं। इनके बाद मुसलमान (11.8%), इसाई (2.6%), सिख (2%), बौद्ध (0.7%), जैन (0.4%), पारसी (0.3%) और यहूदी (0.1%) हैं। इन आठ धार्मिक समुदायों के अतिरिक्त कुछ आदिवासी समुदायों के अपने स्वयं के धर्म हैं। इनके अपने देवी-देवता और कर्मकाण्ड हैं। आठ बड़े धर्मों के अतिरिक्त, हिन्दू धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, और आदिवासी धर्म, जहाँ इस्लाम, इसाई, पारसी और यहूदी भारत में बाहर से आये हैं। सभी आठ धर्म आगे चलकर विभिन्न सम्प्रदायों में बंट जाते हैं। हिन्दू कई प्रकार की देवी-देवताओं को पूजते हैं। मोटे रूप में उपासना करने वाले ये भक्त वैष्णव, शैव, शाक्त, (काली, दुर्गा) आदि हैं। इसके अतिरिक्त गुरु, संत जैसे कि शिवानंद, चिन्मयानंद, आनंद माई आदि भी पूजे जाते हैं। ब्रह्म समाज, आर्य समाज आदि भी हिन्दू धर्म के भाग हैं। इस भाँति हिन्दू धर्म एक ऐसा विशाल केनवास है, जिसमें सभी प्रकार के भक्त हैं।

मुसलमान दो बड़े समूहों में बंटे हैं– शिया और सुन्नी। इन दो समूहों में सुन्नी बहुसंख्यक हैं। इसाई दो बड़े भागों में बँटे हैं– कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट। दूसरी ओर बौद्धों में दो भाग हैं– महायान और हीनयान। इन दोनों का अन्त वैचारिक है। जैन धर्म के दो भाग हैं– दिगम्बर और श्वेताम्बर। जैन और बौद्ध धर्म ब्राह्मणों के प्रभुत्व और जाति व्यवस्था के खिलाफ हैं। पारसी और यहूदी धर्म को मानने वाले छोटे समुदाय हैं। पारसी अधिकांशत: महाराष्ट्र व गुजरात में मिलते हैं। इन धर्मावलम्बियों ने देश के औद्योगिक विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया है। (उदाहरण के लिए, जमशेद जी नासेरबान जी टाटा, ये टाटा और गोदरेज कम्पनियों के संस्थापक थे)। यहूदी विशेष करके महाराष्ट्र व केरल में मिलते हैं। सिख धर्मावलम्बी पंजाब में मिलते हैं। विभाजन के बाद सिखों का फैलाव सारे देश में हो गया है, इनकी गुरुद्वारा और लंगर सबको मुफ्त में भोजन की उदार परम्परा सम्पूर्ण भारत की विशेषता हो गयी है। (गुरुद्वारा सम्पूर्ण भारत के कस्बों, शहरों और बड़े गाँवों में मिलते हैं)।

24.2.2 भाषा

भारत में भाषाई विभिन्नता पायी जाती है। यहाँ कई भाषाएँ/बोलियाँ बोली जाती हैं।

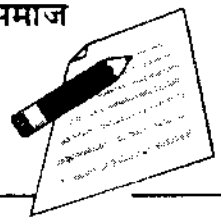

इस देश में 544 भाषाएँ थी, जबकि अधिकांश की लिपियाँ नहीं थी। हाल में भारत में चार भाषा परिवार हैं: अण्डमान की भाषा, आस्ट्रो-एशियोटिक, द्रविड़, इण्डो-आर्यन और तिब्बत-बर्मन। संस्कृत भारत की सबसे महत्वपूर्ण एवं सबसे प्राचीन भाषा है। संस्कृत ने लगभग सभी भारतीय भाषाओं को प्रभावित किया है। लगभग सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में जहाँ-तहाँ संस्कृत के शब्द मिलते हैं। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 19 भाषाओं को सम्मिलित किया गया है। ये भाषाएँ हैं: असमी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, कोकंणी, मलयालम, मणीपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिन्धी, तमिल, तेलगु और उर्दू। ये भाषाएँ राजकीय भाषाएँ हैं। यानी इन भाषाओं को सरकार की ओर से मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में राज्य के कार्यालय के कामकाज में जो त्रिभाषी फोर्मूला काम में लिया जाता है, वे भाषाएँ हैं– हिन्दी, अंग्रेजी एवं स्थानीय भाषा। इन सभी भाषाओं में हिन्दी को (48%) लोग बोलने वाले हैं। इसके बाद बोली जाने वाली भाषाएँ– बंगला, तेलगू, मराठी, (प्रत्येक भाषा के बोलने वाले 8 प्रतिशत हैं।) तमिल और उर्दू (8%), गुजराती (5%) मलयालम, कन्नड़ व उड़िया (4%), पंजाबी के 3 प्रतिशत हैं और अन्य भाषाओं में असमी तथा कश्मीरी प्रत्येक के एक-एक प्रतिशत हैं।

24.2.3 जाति

जाति व्यवस्था भारत में बेजोड़ है, मूल रूप से यह हिन्दुओं में पायी जाती है। इसका प्रारम्भ वर्ण व्यवस्था यानी वैदिक युग (लगभग 1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक) से है। हिन्दुओं में चार वर्ण थे–ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शुद्र। ये वर्ण मोटे रूप से व्यवसाय के चार स्तरों से जुड़े थे, जो पवित्र और अपवित्र में बंटे हुए थे। पवित्र, आपवित्र की यह अवधारणा व्यवसाय, भोजन की आदतें, पहनावा और भाषा से जुड़े होते थे–बाद के अध्यायों में इनका हम विस्तृत उल्लेख करेंगे। वैदिक काल में अस्पृश्यता का कोई अस्तित्व नहीं था। बाद के वैदिक युग में (लगभग 1000 ई.पू) यह अस्तित्व में आयी तथा बाद के व्यवसायों में विभिन्न जातियों की विभिन्नता पायी गई। आज लगभग 3500 जातियाँ हैं, जिनमें से 751 अनुसूचित जातियाँ हैं। जाति व्यवस्था ने आर्थिक सहयोग की एक सहयोगी व्यवस्था को जन्म दिया। यजमानी व्यवस्था ने सामाजिक व्यवस्था को बनाया। इसका मतलब हुआ वस्तुओं एवं सेवाओं का विभिन्न जातियों में आदान-प्रदान। यह व्यवस्था यजमान व्यवस्था का एक स्वरूप है। संरक्षक को यजमान मानते हैं। यह एक भूस्वामी हो सकता है। सेवा करने वाला कमीन कहलाता है। कमीन यजमान को अपनी सेवाएँ देता है। सेवाओं में खाद्य सामग्री, निवास का स्थान, मुफ्त भोजन, कोर्ट-कचहरी में सहायता कुल मिलाकर जाति व्यवस्था यजमान-कमीन व्यवस्था कहलाती है। आज यह व्यवस्था धीरे-धीरे लुप्त

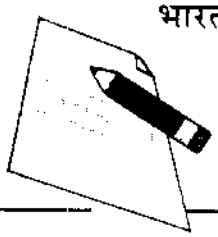

Notes

होती जा रही है। शहरी क्षेत्रों में जाति व्यवस्था खत्म हो रही है। संविधान की दृष्टि में जाति व्यवस्था को कोई सरकारी मान्यता नहीं है।

पाठगत प्रश्न 24.2

(1) विश्व के धर्मों में कौन से धर्म भारत में पाये जाते हैं?

---

(2) हिन्दुओं को बहुसंख्यक समुदाय क्यों कहा जाता है?

---

(3) संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाएँ सम्मलित की गयी हैं?

---

(4) भारत में कितने वर्ण हैं?

---

(5) जजमानी व्यवस्था किसे कहते हैं?

24.3 एकता का इतिहास एवं परम्परा

भारत के प्राचीन, मध्यकालीन आधुनिक युगों में हमें एक सांझा संस्कृति की एकता दिखायी देती है। दूसरे शब्दों में, भारत के किसी भी ऐतिहासिक काल में सांझा संस्कृति यानी मिली-जुली संस्कृति रही है। यह मिली-जुली संस्कृति ही अखिल भारतीय संस्कृति रही है। इसने सांस्कृतिक मुख्य धारा को विकसित किया है। परिवर्तन होते हुए भी इस संस्कृति की मुख्यधारा में किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया। राजनीतिक व्यवस्था कैसी भी हो, इस सांस्कृतिक व्यवस्था ने बराबर अपनी स्वतन्त्रता बनाए रखी है। क्षेत्र के स्तर पर कई राज्यों और साम्राज्यों के बीच में इस देश में युद्ध हुए हैं लेकिन इस सांस्कृतिक एकता में कहीं कमी नहीं आयी है। चक्रवर्ती राजा और अश्वमेध यज्ञ की अवधारणा ने राजनीतिक एकता को बनाए रखा है। कई राजाओं ने अपने साम्राज्य का विस्तार बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्रों तक विकसित कर दिया। कनिष्क, खखेला, अशोक

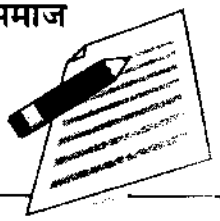

समुद्रगुप्त आदि राजाओं के नियंत्रण में विशाल साम्राज्य थे। हम सभी अशोक को महान् कहते हैं। उसका राज्य पाटलीपुत्र तक था। उसने कलिंग पर विजय पाई। कलिंग की लड़ाई में अशोक ने खूब खून-खराबा किया और बाद में वह बौद्ध बन गया। दक्षिण में यथा चोल, चेरा, पाण्ड्य रसत्रकूट, चालुक्य, पल्लव, विजयनगर और शुंग, कुषाण, गुप्त आदि ने स्थानीय संस्कृतियों को विकसित किया। इन राजाओं ने बड़े राज्य स्थापित किये। इनके संरक्षण के कारण मंदिरों का निर्माण हुआ और इस निर्माण ने दक्षिण भारत को एक गौरवपूर्ण स्थान दिया।

मध्यकाल में भी इस्लाम ने भारतीय संस्कृति में प्रवेश किया। बंगाल, लखनऊ, हैदराबाद शहरों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी मुस्लिम संस्कृति तथा भारतीय परम्पराओं में अच्छा मेलजोल हुआ। इस्लाम मूर्ति पूजा के खिलाफ था। यह एक ईश्वरवादी है और इस धर्म में कोई सोपाना व्यवस्था नहीं है। इस्लाम के जो प्रभाव हिन्दू परम्पराओं पर पड़े हैं, उन्हें तीन स्तरों पर देखा गया है। इन्हें हम इस तरह रखेंगे (1) मुस्लिम प्रशासन के समय पड़ने वाले प्रभाव (2) ब्रिटिश प्रशासन काल में पड़ने वाले प्रभाव, और (3) 1930-1947 के बीच में पड़ने वाले प्रभाव। ये प्रभाव ऐसे थे, जिन्होंने संघर्ष और तनाव को बढ़ाया तथा सांस्कृतिक अनुकूलन को जन्म दिया। अकबर के दीन इलाही धर्मों में कई धर्मों का मिश्रण मिलता है, जिसने राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा दिया। ब्रिटिश काल में कई सामाजिक सुधार हुए, जिन्होंने हिन्दुओं से प्रभावित किया। अब इस्लाम का प्रभाव कम हो गया तथा धीरे-धीरे इस्लाम की परम्परा राजनीति की ओर जुड़ गयी। अन्त में, तीसरी अवस्था में पहुँचकर यानी स्वतन्त्रता आंदोलन के बाद में हिन्दुओं और मुस्लमानों में दो अलग राज्य बनने की अवधारणा ने जन्म दिया। परिणामस्वरूप पाकिस्तान का अस्तित्व सामने आया।

आधुनिक काल में ब्रिटिश शासन ने भारत में पाश्चात्य, संस्कृति से परिचय कराया। बैंकिग व्यवस्था, प्रशासन, सैनिक संगठन, आधुनिक चिकित्सा इत्यादि ने भारत में कुछ परिवर्तन पैदा किये। पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था ने वैश्विक दृष्टिकोण मुख्य रूप से तार्किक और धर्मनिरपेक्षता की भावना को लोगों में पैदा किया। भौतिक विकास के संदर्भ में पाश्चात्य विज्ञान, तकनीकी, यातायात और संचार ने लोगों के जीवन स्तर को उच्च किया। उद्यमशीलता की भावना ने भारत को एक औद्योगिक राष्ट्र के पथ पर अग्रसर किया। सरकार का प्रजातान्त्रिक स्वरूप, वयस्क मताधिकार और मानवाधिकार इत्यादि ने भारत को विश्व की चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाया। इस प्रकार प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक कालों में सांस्कृतिक एकता को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है।

Notes

पाठगत प्रश्न 24.3

कोष्ठक में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

(1) भारतीय राजा.....क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करते थे। (सांस्कृतिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक)

(2) अशोक ने ..... राज्य को जीता। (पाटलीपुत्र, कलिंग, विजयनगर)

(3) भारत में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर..... का प्रभाव है। (ब्रिटिश, मुस्लिम और फ्रेंच)

(4) चोल, चेरा और पाण्ड्या..... भारत के भाग हैं। (दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, उत्तर)

24.4 एकता की प्रक्रिया

भारत में एकता की प्रक्रिया को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है: (1) अन्तर्निहित एकता, और (2) चुनौतीपूर्ण एकता। चुनौतीपूर्ण एकता तब आई जब 1947 में भारत का विभाजन हुआ। इस अवसर पर निहित स्वार्थों ने यानी साम्प्रदायिक ताकतों ने एकता को खतरे में डाल दिया। परिणामस्वरूप हिन्दुओं और मुसलमानों में एक दूसरे के प्रति संदेह और असहनशीलता की भावना पैदा हुई। इस तरह की संघर्षात्मक स्थिति राष्ट्र निर्माण में सहयोगी नहीं होती। यह अवस्था ऐसी होती है, जब हमें जन जागृति करनी होती है और उपयुक्त शिक्षा के कार्यक्रम चलाने होते हैं।

दूसरी ओर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में एकता की बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। एकता का आशय सात्मीकरण से हैं। तात्पर्य है कि जैसे सिक्कों को ऊँचे तापमान में गला देना। सभी संस्कृतियों को सांझा संस्कृति के रूप में बदल देना। यह समाज बहुलतावादी है। ये तीनों अवधारणाएँ पश्चिम की विचारधारा से आई हैं। पश्चिम में अमेरीका की संस्कृति को पिघलने वाली संस्कृति के रूप में जाना जाता है। इसमें होता यह है कि समाज में संस्कृति अपनी स्वायत्ता तो रखती है लेकिन वह सिक्कों के पिघल जाने की तरह अपना अस्तित्व भी खो देती है, ऐसी संस्कृति सांझा संस्कृति कहलाती है। दूसरे शब्दों में, यह सांझा संस्कृति ही राष्ट्रीय संस्कृति है। विभिन्न संस्कृतियों की पृथक पहचान खो जाती है और एक मिली-जुली संस्कृति का स्वरूप ले लेती है। इस तरह की मिली-जुली संस्कृति में विभिन्न संस्कृतियाँ सह-अस्तित्व को रखकर के राष्ट्रीय पहचान बनाये रखते हैं। यद्यपि सांस्कृतिक विभिन्नता तो रहती ही

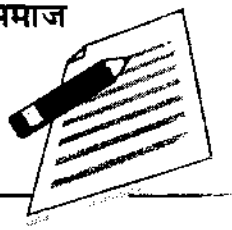

है। भारत के संदर्भ में अभी यह सांझा संस्कृति पैदा करने में सफल नहीं रहा है। अस्तु, यहाँ का बहुल सांस्कृतिक पर्यावरण अपने बुनियादी तत्वों में जैसे कि भोजन की आदतें, संस्कृति, पहनावा, भाषा, क्षेत्रीयता, धर्म आदि बहुलता को बताते हैं। यहाँ एक राजनीतिक सांझा संस्कृति है।

सच्चाई यह है कि भारत में सांझा संस्कृति के होते हुए भी एक स्पष्ट राष्ट्रीय पहचान है। एकीकरण की प्रक्रिया हमें बताती है कि हमारे यहाँ महान् लक्ष्य है। इसका आशय है, एक राष्ट्रीयता को प्राप्त करना और विभिन्न संस्कृतियों की स्वायत्ता के होते हुए भी एक सांझा संस्कृति को बनाना। यह सांझा संस्कृति भारतीय संस्कृति की मुख्यधारा है। यह संस्कृति एक वटवृक्ष की तरह विशाल है, इसकी शाखाएँ वृक्ष को बनाए रखती हैं। भारत की सांझा संस्कृति की उप संस्कृतियाँ, बंगाली संस्कृति, उड़िया संस्कृति, दक्षिण भारतीय संस्कृति, अवधि संस्कृति आदि हैं।

कई शताब्दियों तक विभिन्न धर्म हमारे यहाँ शांतिपूर्वक रहे हैं। कई ग्रामीण अध्ययन जो समाजशास्त्रियों ने किये हैं, उनके अनुसार गाँवों में मुसलमान सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के रूप में रहते हैं। द्वारका के बारे में जो मौलिक द्वारका है, यह कहा गया है:

- गुजरात के मूलरूप में जो द्वारका है, हिन्दुओं के चार धार्मिक केन्द्रों में से पाँच कब्रें पायी जाती हैं। हिन्दू और मुसलमान इन कब्रों को हिन्दू पंचवीर कहते हैं तथा इस पर हरी चादर चढ़ाई जाती है। पाँच बहादुरों पर पीली चादर चढ़ाई जाती है।
- गाँवों में कई स्थानीय मुस्लिम देवी-देवता हैं जिनके अनुयायियों में हिन्दू और मुस्लिम दोनों हैं। इनके दृष्टान्त स्वरूप दिल्ली के सैयद बाबा हैं। बाराबंकी उत्तर प्रदेश में दैव शरीफ हैं। इसी तरह राजस्थान में अजमेर शरीफ हैं।

हिन्दू समाज के महान् धर्मों में चार धाम हैं। ये चार धाम उत्तरांचल में बद्रीनाथ है, पश्चिम गुजरात में द्वारका, दक्षिण के तमिलनाडु में रामेश्वरम् और पूर्व, उड़ीसा में पुरी हैं। ये सभी धाम देश की महानता को बताते हैं। ये सभी धाम ही हमारा भारत हैं। शिवलिंग या ज्योर्तिलिंग देश में बारह हैं। इन लिंगों में आन्ध्र प्रदेश के तिरुपति हैं, असम में कामख्या पीठ, बिहार में गया, जम्मू में वैष्णो देवी तथा राजस्थान में पुष्कर है। ये लिंग देश के लोगों को एक सूत्र में बांधते हैं। सत्य सांई बाबा पुट्टी पुरथी में हैं। सांई बाबा शिरडी महाराष्ट्र में हैं। इसी तरह पाण्डेचेरी में भीम्मा है। वास्तुकारी के आश्चर्यों में आगरा का ताजमहल, दिल्ली का लाल किला, एवं जमा मस्जिद हैं। लखनऊ में बड़ा इमामबाड़ा, हैदराबाद का चार मीनार कई पर्यटकों को अपनी ओर

Notes

आकर्षित करते हैं। इस भाँति भारत की एकता केवल राजनीतिक और भौगोलिक ही नहीं, सांस्कृतिक भी है।

पाठगत प्रश्न 24.4

निम्नलिखित का मिलान कीजिए:

(1) अजमेर शरीफ	लखनऊ
(2) इमामबाड़ा	उड़ीसा
(3) सिन्दी	आन्ध्र प्रदेश
(4) कन्याकुमारी	राजस्थान
(5) पुरी	तमिलनाडु

आपने क्या सीखा

- इस पाठ में आपने भारत जैसे महान् देश की एकता व अनेकता के बारे में सीखा है।
- धर्म, भाषा, संस्कृति, जाति, समुदाय आदि की विभिन्नता के होते हुए भी भारत अतीत, वर्तमान और भविष्य में एक संगठित राष्ट्र रहेगा।
- इतिहास बताता है कि भारत में एकता की यह प्रक्रिया विभिन्न राज्यों ने वास्तु और सांस्कृतिक परम्परा को बनाए रखकर की है।
- हमारी सांस्कृतिक एवं भाषा सम्बन्धी विरासत को अखिल भारतीय फ्रेम-वर्क में ढाल रखा है।
- सारा विश्व अब यह मानने लगा है कि भारत में कई क्षेत्रों में पश्चिमी देशों की संस्कृति की नकलमात्र ही नहीं की है, उसने अपनी भारतीयता को बनाए रखा है।

पाठान्त प्रश्न

(1) विभिन्न में एकता से आप क्या समझते हैं?

Notes

(2) धर्म के अर्थ में भारत में कौन सी विभिन्नताएँ हैं?

---

(3) मेल्टिंग पोट (घरिया) की अवधारणा को संक्षेप में बताइए।

---

(4) विभिन्न समुदायों में सह-अस्तित्व के प्रकृति की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

---

(5) भारत में एकता कैसे बनाए रखी जाती है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1

(i) गलत

(ii) सही

(iii) गलत

(iv) सही

(v) गलत

24.2

(i) आठ

(ii) भारत में हिन्दू 83 प्रतिशत हैं।

(iii) अठारह

(iv) चार

(v) विभिन्न जातियों के बीच वस्तु तथा सेवा का आदान-प्रदान

24.3

(i) सांस्कृतिक

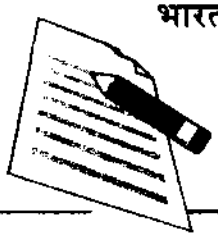

Notes

(ii) कलिंग

(iii) ब्रिटिश

(iv) दक्षिण

24.4

(i) राजस्थान

(ii) लखनऊ

(iii) आन्ध्र प्रदेश

(iv) तमिलनाडु

(v) उड़ीसा